प्रतिवेदन

सृष्टि-विमर्श

(पं. मधुसूदन ओझा के वाङ्मय के परिप्रेक्ष्य में)

सांख्ययोग विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ एवं श्री शंकर शिक्षायतन के संयुक्त तत्त्वावधान में "सृष्टिविमर्श : पं. मधुसूदन ओझा के वाङ्मय के परिप्रेक्ष्य में" विषय पर दिनांक २९ फरवरी २०२० को श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली में एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का समायोजन किया गया। इस संगोष्ठी में ३० विद्वानों द्वारा पं. मधुसूदन ओझा और पं. मोतीलाल शास्त्रीजी के सृष्टि विषयक ग्रन्थों को आधार बना कर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया।

उद्घाटन समारोह में अतिथियों का स्वागत करते हुए प्रो. मारकण्डेय नाथ तिवारी ने कहा कि वैदिकविज्ञान के अनुसार सृष्टि के अनेक सिद्धान्तों में एक नियतिवाद अथवा स्वभाववाद का सिद्धान्त है। यह सृष्टिविषयक सिद्धान्त चार्वाक् सिद्धान्त से स्पष्टतया नजदीक प्रतीत होता है। यहाँ कार्य-कारण सिद्धान्त का प्रयोग नहीं है अपितु प्रकृति अर्थात् नियति अपने आप सृष्टि में लगी रहती है।

विषय प्रवर्तन करते हुए प्रो. सन्तोष कुमार शुक्ल, समन्वयक, श्री शंकर शिक्षायतन ने कहा कि ओझा जी ने पौराणिक सृष्टिप्रक्रिया को उद्घाटित करने का प्रयास किया है। काम, तप और श्रम इन तीन पारिभाषिक शब्दों के आधार पर सृष्टि प्रक्रिया की व्याख्या की गयी है। काम का अर्थ इच्छा है इसी से संकल्प होता है। संकल्प ही सभी कार्यों का मूल है। तप का अर्थ क्रिया है। यहाँ क्रिया का अर्थ प्रक्रिया है। श्रम का अर्थ तत्त्वात्मक पदार्थ है। ओझाजी ने क्रमशः मन से इच्छा, प्राण से तप और वाक् से श्रम को परिभाषित किया है। मन-प्राण और वाक् से ही समस्त सृष्टि होती है। प्रो. शुक्ल ने सृष्टि के भेदों का वर्णन करते हुए कहा कि मानसिक और मैथुनी के भेद से सृष्टि के दो प्रकार हैं। मानसिक सृष्टि का सम्बन्ध वेद से और मैथुनी सृष्टि का संबन्ध पुराणविद्या से है।

प्रो. प्रमोद कुमार पाण्डेय, पूर्व विभागाध्यक्ष, भाषाविज्ञान विभाग, जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय, नई दिल्ली ने अपने उद्घाटन वक्तव्य में भाषिक सृष्टि का सविस्तार प्रतिपादन करते हुए कहा कि वाक् सृष्टि के क्रम में ऊँकार का विशेष स्थान है । उन्होंने

कहा कि षट् चक्रों के माध्यम से सृष्टि निरन्तर चलती रहती है। यह षट् चक्र मानव शरीर में अधिष्ठान से लेकर ब्रह्मरन्ध तक व्याप्त रहता है। एक- एक चक्र पर निश्चित रूप से एक ध्वन्यात्मक वर्ण रहता है।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रो. हरेराम त्रिपाठी दर्शनसंकायाध्यक्ष, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ ने अध्यक्षीय उद्बोधन में ओझाजी के सृष्टि विषयक अपरवाद, अम्भोवाद एवं सदसद्वाद् पर प्रकाश डालते हुए सृष्टि विषयक इन मतों का विश्लेषण किया।

शोधपत्रों की प्रस्तुति दो शैक्षणिक सत्रों में की गयी। प्रथम शैक्षणिक सत्र की अध्यक्षता प्रो. ललित कुमार गौड, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र हरियाणा ने किया। उन्होंने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि आत्मा से ही सृष्टि होती है। ओझाजी ने आत्मा को प्राणमय, मनोमय और वाङ्मय बताया है। यदि समाज के समक्ष वाणी रूप प्रकाश न होता तो यह सृष्टि क्रियाशील न हो कर स्थिर होता। अतः वाक् का महनीय स्थान सृष्टिप्रक्रिया में है। सारस्वत अतिथि के रूप में विराजमान प्रो. के अनन्त ने विशिष्टाद्वैत सम्मत सृष्टिप्रक्रिया पर प्रकाश डालते हुए कहा कि सगुण ब्रह्म ही सृष्टि का मूल कारण है। ओझाजी ने इसी को व्याकृत शब्द से, व्यक्त शब्द से एवं मृत्यु शब्द से प्रतिपादित किया है। इस सत्र में विविध विश्वविद्यालयों से आये हुए १० विद्वानों ने विद्वत्तापूर्ण शोधपत्रों के माध्यम से सृष्टिविषयक सिद्धान्तों का विश्लेषण प्रस्तुत किया।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रो. विष्णुपद महापात्र, विभागाध्यक्ष, न्यायदर्शन, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ ने सृष्टिविषयक न्यायदर्शन के पक्ष को उद्घाटित किया। इस सत्र में सारस्वत अतिथि के रूप में प्रो. गोपाल प्रासाद शर्मा, विभागाध्यक्ष, वेद विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ द्वारा अपने उद्बोधन में सृष्टि विषयक वैदिक मत का प्रतिपादन किया गया। इस सत्र में विविध विश्वविद्यालयों एवं अन्य शैक्षणिक संस्थानों के १५ प्रतिभागी विद्वानों ने अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया।

समापन सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय, कुलपति, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ द्वारा ओझाजी के सृष्टि विषयक सिद्धान्त पर विमर्श करने वाले संगोष्ठी के सभी प्रतिभागी विद्वानों को साधुवाद देते हुए सृष्टि के सम्बन्ध में प्रतिपादित ओझाजी के ग्रन्थों के अध्ययन-अध्यापन एवं शोध करने हेतु प्रोत्साहित किया गया।

समापन सत्र में सारस्वत अतिथि के रूप में दर्शन संकायाध्यक्ष प्रो. हरेराम त्रिपाठी ने अपरवाद के आधार पर सृष्टि का विश्लेषण किया। उन्होंने कहा कि सांख्यदर्शन परिणामवाद को स्वीकार करता है। दूध का दही रूप में बदलना ही परिणामवाद है। परन्तु पं. मधुसूदन ओझा ने वस्तु में रहने वाला स्वभाविक धर्म को परिणामवाद कहा है। आपरवाद में वर्णित है कि अग्नि की ज्वाला से ताप और प्रकाश होते हैं, जल में शीतलता, अन्न एवं जल से तृप्ति स्वभाव से ही होते हैं। माननीय कुलपति जी ने कहा कि यह कार्यक्रम अत्यन्त ही सफल रहा है। श्री शंकर शिक्षायतन वैदिकविज्ञान के प्रचार-प्रसार में निरन्तर लगा रहता है। उन्हीं के करकमल से प्रतिभागी विद्वानों को प्रमाणपत्र प्रदान किया गया। लक्ष्मी कान्त विमल ने समागत विद्वानों को धन्यवाद अर्पित किया और वैदिक शान्तिपाठ से कार्यक्रम की पूर्णता हुई।

इस कार्यक्रम में जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, कुरुक्षेत्र विश्वविद्याल एवं अमेटी विश्वविद्यालय आदि शैक्षिक संस्थानों से लगभग १०० प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की।

====